वन उत्पादकता संस्थान, रांची

महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर

स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम, दिनांक: 01.10 2019

स्वच्छ भारत अभियान एवं महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती के पूर्व संध्या पर संस्थान के निदेशक एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) के निर्देशन में दिनांक 01.10 2019 को संस्थान परिसर को स्वच्छ एवं single use plastic का उपयोग सीमित करने संबंधी जागरूकता हेतु संस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) एवं सभी वरिष्ठ वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने संस्थान के सफाई अभियान में भाग लिया। इसके तहत संस्थान के दोनों परिसरों तथा आसपास के स्थलों से प्लास्टिक (single use plastic) को एकत्रित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान ने अपने संबोधन में कहा की माननीय प्रधानमंत्री के single use plastic उपयोग न करने के आह्ववाहन में आज हम सब इस कार्यक्रम में सम्मिलित हैं तथा हम सब single use plastic का उपयोग घर हो या कार्यालय नहीं करने का विचार रखें एवं अन्य लोगों को भी इसके बारे में जागरूक करें।

प्लास्टिक प्रदूषण एवं single use plastic विषय पर संस्थान के सभागार में एक संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। इसमे संस्थान की सुश्री नुजहत बानो, जे.पी.एफ़. ने प्लास्टिक प्रदूषण तथा single use plastic पर वक्तब्य दिया। उन्होने प्लास्टिक का वर्गीकरण (PET, HDPE, PVC, LDPE, PP, PS, Poly-carbonate) भी बताया। उन्होने कहा कि प्लास्टिक पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुचा रहा हैं, यहाँ तक कि जलीय जीव-जन्तु का जीवन भी संकट में हैं। यह मानव जाति में फैल रहे कैंसर के रोग को और बढ़ा देता हैं। सुश्री खुश्बु कुमारी, जे.पी.एफ़. ने plastic waste management से जुड़े जैव तकनीकी अनुसंधान के क्षेत्र में कुछ संस्थानों द्वारा किए जा रहे कार्यों को बहुत ही क्रांतिकारी उपलब्धि बताया। उन्होने कहा कि इस पर एक अनुसंधान जापान में किया जा रहा हैं जो उत्प्रेरक पैदा करने वाले जीवाणु के single use plastic degradation करने में काफी लाभदायी हो सकता हैं। श्री मुजीबुर रहमान ने प्लास्टिक के इतिहास के बारे में जानकारी दी तथा भारतवर्ष में इसका उपयोग कब से शुरू हुआ इसपर भी चर्चा की। इन्होने खासकर single use plastic तथा पानी की बोतल पर चर्चा की। सुश्री मीनाक्षी कुमारी, जे.पी.एफ़. ने भी प्लास्टिक एवं single use plastic से फैल रहे प्रदूषण के

बारे में बताया। इन्होने कहा कि प्लास्टिक को degrade होने में सैकड़ों वर्षो का समय लग जाता हैं जिससे हमारी जीव जन्तु तथा भूमि भी प्रदूषित हो जाती हैं। उन्होने कहा कि प्लास्टिक कि जगह पर मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री कन्हाई लाल डे ने प्लास्टिक तथा single use plastic से समुंद्री जीव जन्तुवों तथा मनुष्यों को होने वाले नुकसान से अवगत कराया।इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.शरद तिवारी ने प्लास्टिक तथा single use plastic से निवारण एवं उसका विकल्प के बारे में शोध करने पर ज़ोर दिया जो कि आमलोगों के लिए सुलभ हो तथा आर्थिक दृष्टि से भी कम कीमत पर उपलब्ध हो। डॉ. तिवारी ने बताया कि पूर्व में लोग यात्रा के दौरान अपने साथ पीने का पानी का बर्तन मिट्टी का बना होता था। समय पुनः लौट रहा रहा हैं यदि समय रहते हमलोग जागरूक नहीं हो पाये।

इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा समूह समन्वयक (अनुसंधान) डॉ॰ योगेश्वर मिश्रा ने प्लास्टिक के विषय पर रासायनिक एवं सांख्यिकीय आकड़े संबन्धित विचारों को वृहत रूप से समझाया तथा वानिकी में पॉलिथीन का उपयोग पौध उत्पादन में अधिक मात्रा में किए जाने संबंधी चर्चा की तथा उसका विकल्प खोजे जाने पर बल दिया तथा single use plastic से निवारण एवं उचित स्थान पर निस्पादन किए जाने की आवश्यकता पर चर्चा की।

अंत में संस्थान के निदेशक डॉ॰ नितिन कुलकर्णी ने सभी वक्ताओं कि सराहना की तथा पूर्वकाल में बिना प्लास्टिक के उपयोग होने वाले प्रणाली पर ज़ोर डाला (जैसे शीशे की बोतल में दूध का मिलना, पानी के लिए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करना तथा अन्य बिना प्लास्टिक के थैलों का प्रयोग करना आदि पर बल दिया तथा बताया कि अब हमें उसी ओर अग्रसर होना होगा जिससे प्लास्टिक का कम से कम उपयोग किया जा सके अन्यथा इसका भविष्य की पीढ़ी को बहुत भयंकर नुकसान भुगतना पड़ेगा। उन्होने लोगों से थैला लेकर बाज़ार जाने का भी आग्रह किया तथा कहा कि जो प्लास्टिक हम इस्तेमाल करते हैं उसे एक से ज्यादा बार उपयोग में लाए तथा उचित जगह पर उसका निस्पादन करें। उन्होने इसपर भी बल दिया कि हमे इस क्षेत्र में और भी जागरूक होने तथा आसपास के लोगों को भी जागरूक करने कि जरूरत हैं। निदेशक ने संस्थान के सभी वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से plastic तथा single use plastic का उपयोग नहीं करने बाबत शपथ दिलाई तथा कहां कि प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल किया जाना चाहिए और हो सके तो इसके स्थान पर पेपर बैग तथा बांस के बने थैलों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम का सफल संचालन वैज्ञानिक सुश्री रूबी एस. कुजूर ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन. वैध, मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री बी.डी. पंडित, तकनीकी अधिकारी एवं श्री सूरज कुमार, तकनीकी सहायक का प्रमुख योगदान रहा।

परिसर सफाई की झलक

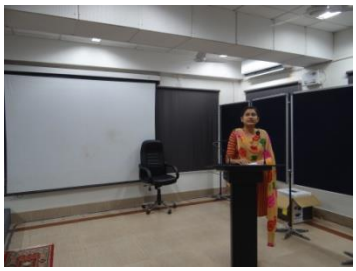

सभागार में संचालित कार्यक्रम

प्लास्टिक एवं single use plastic पर व्याख्यान